बाबा मुक्तानन्द के जन्मदिवस के सम्मान में

हे श्रीगुरु, आपको नमस्कार!

सन्त-कवि ज्ञानेश्वर महाराज द्वारा रचित उद्धरण

१

आपको नमस्कार! आप सांसारिक जीवन रूपी अन्धकार में सूर्य हैं, परमोच्च शक्तियों से युक्त हैं, तारुण्य से सम्पन्न हैं, और अपने शिष्यों की परम सत्य की प्राप्ति का पोषण करने में आप आनन्दित होते हैं।

हे श्रीगुरु, आपकी जयजयकार! आप समस्त देवों में श्रेष्ठ हैं, आप शुद्ध प्रज्ञा रूपी प्रभात के उदित होते हुए सूर्य हैं और आप परम सुख का उदय हैं।

ज्ञानेश्वर महाराज [लगभग १२७५-१२९६] भारत के महाराष्ट्र राज्य के सन्त-कवि थे। उन्होंने 'ज्ञानेश्वरी' तथा 'अमृतानुभव' की रचना की जिन्हें व्यापक रूप से संसार के महानतम आध्यात्मिक ग्रन्थ माना जाता है। 'ज्ञानेश्वरी', भगवद्गीता पर टीका है और 'अमृतानुभव' ईश्वर के साथ ऐक्य की अनुभूति पर काव्यात्मक ग्रन्थ है। ज्ञानेश्वर महाराज सूक्ष्म सत्यों को सरल व काव्यात्मक भाषा में व्यक्त करने के लिए विख्यात हैं। एक ऐसे समय में, जब भारत में अधिकतर धर्म-ग्रन्थों की भाषा संस्कृत थी, ज्ञानेश्वर महाराज ने स्थानीय भाषा, मराठी में लेखन किया और स्वानुभव के आधार पर शास्त्रीय ग्रन्थों की व्याख्या की।

ज्ञानेश्वरी, अध्याय १०, ओवी २ तथा अध्याय १४, ओवी १

अंग्रेज़ी भाषान्तर : स्वामी कृपानन्द, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [ऑल्बनी : स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क प्रेस, १९८९], पृ १३१, २२१।

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।